भारत सरकार

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 1090

दिनांक 28 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

जीवन के प्रथम छह माह तक स्तनपान कराने की दरों में गिरावट

1090 श्री एस. निरंजन रेड्डीः
श्रीमती राजाथी :

क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने इस बात का संज्ञान लिया है कि संस्थागत प्रसवों तथा जन्म के तुरंत बाद स्तनपान प्रारंभ करने की दर में सुधार होने के बावजूद जीवन के प्रथम छह माह के दौरान केवल स्तनपान करवाने की दर, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5) के 63.7 प्रतिशत से घट कर राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6 (एनएफएचएस-6) में 55.8 प्रतिशत रह गई है, और क्या इस समस्या के समाधान के लिए कोई विशिष्ट कदम उठाए हैं;

(ख) क्या सरकार ने केवल स्तनपान कराने की दर में आई गिरावट के कारणों तथा बढ़ते हुए सिजेरियन प्रसवों, प्रसवोत्तर स्तनपान परामर्श की अपर्याप्तता और कार्य पर शीघ्र लौटने के इसके प्रभाव को समझने के लिए कोई आकलन किया है; और

(ग) जीवन के प्रथम छह माह के दौरान केवल स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए, विशेषतः कामकाजी माताओं तथा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के लिए कौन-कौन से सुधारात्मक उपाय किए गए हैं अथवा किए जाने का विचार है?

उत्तर

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्रीमती अनुप्रिया पटेल)

(क) से (ग): राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 6 (एनएफएचएस 6 2023-24) के अनुसार, जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान शुरू करने की दर एनएफएचएस-5 (2019-21), में 41.8% से बढ़कर 50.1% हो गई है, और 6 महीने से कम उम्र के बच्चों के लिए वर्तमान में स्तनपान संकेतक एनएफएचएस 5 के 95.1% से बढ़कर एनएफएचएस 6 में 95.6% हो गया है।

पहले छह महीनों तक केवल स्तनपान कराने की दर कई कारकों से प्रभावित होती है, जैसे कि सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाएँ, जिनमें व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ और विकल्प, पूर्व स्तनपान आहार और शिशु दूध के विकल्प का उपयोग, पारिवारिक प्रथाएँ, स्तनपान की आवृत्ति आदि शामिल हैं।

इन चुनौतियों का समाधान करने और कामकाजी माताओं और अनौपचारिक सेक्टर में कार्यरत महिलाओं सहित, पूरे देश में, पहले छह महीनों के दौरान विशेष स्तनपान की प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) कार्यक्रमों में विभिन्न उपाय शामिल किए गए हैं जो निम्नवत हैं:

- **मातृ असीम स्नेह (एमएए) कार्यक्रम:** भारत सरकार वर्ष 2016 से मातृ असीम स्नेह (एमएए) कार्यक्रम का कार्यान्वयन कर रही है, जिसका उद्देश्य कामकाजी माताएँ और अनौपचारिक सेक्टर में कार्यरत महिलाओं सहित स्तनपान कराने वाली सभी महिलाओं के बीच स्तनपान की सुरक्षा और समर्थन पर बल देते हुए शिशु और छोटे बच्चे के लिए सर्वोत्तम पोषण प्रथाओं को प्रोत्साहन देना है।

  एमएए प्रोग्राम के प्रमुख घटकों में शामिल हैं: एएनसी विज़िट के दौरान गर्भवती महिलाओं को शीघ्र स्तनपान शुरू करने और शुरूआती 6 माह तक केवल स्तनपान के लिए परामर्श देना; स्वास्थ्य केंद्रों पर जन्म के 1 घंटे के भीतर स्तनपान शुरू करने को बढ़ावा देने के लिए चिकित्सा मार्गदर्शन, प्रशिक्षित स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं द्वारा स्तनपान संबंधी समस्याओं और गलत धारणाओं के निवारण के लिए स्तनपान सहायता; विशेष स्तनपान प्रथाओं को जारी रखने और पूर्व स्तनपान आहार और शिशु दूध के विकल्प से बचने के लिए परामर्श, 2 वर्ष और उससे अधिक उम्र तक सही और निरंतर स्तनपान को बेहतर बनाने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की क्षमता निर्माण; स्वास्थ्य केंद्रों पर, वीएचएसएनडी, टीकाकरण सत्र और समग्र शिशु बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (एसएसबीएसके) के तहत घर-घर जाकर माताओं, देखभाल करने वालों और परिवार के सदस्यों को अनन्य स्तनपान के बारे में परामर्श देना; स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक स्तर पर आशा कार्यकर्ताओं (एएसएचए) द्वारा माताओं की बैठकें करना; और स्तनपान के प्रति लोगों की भागीदारी बढ़ाने और सकारात्मक माहौल बनाने के लिए हर वर्ष दिनांक 1 से 7 अगस्त तक पूरे देश में 'विश्व स्तनपान सप्ताह' (डब्ल्यूबीडब्ल्यू) का आयोजन शामिल है।

- **स्तनपान प्रबंधन केंद्र:** नवजात गहन परिचर्या इकाइयों और नवजात विशेष देखभाल इकाइयों में भर्ती बीमार, समय से पहले जन्मे और कम जन्म भार वाले शिशुओं को खिलाने के लिए सुरक्षित, पाश्वराइज्ड दाता मानव दूध की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समग्र स्तनपान प्रबंधन केंद्र (सीएलएमसी) की स्थापना की जाती है; और माताओं को स्तनपान संबंधी सहायता प्रदान करने और माँ के अपने दूध के निष्कासन की सुविधा प्रदान करने के लिए स्तनपान प्रबंधन इकाइयाँ (एलएमयू) स्थापित की जाती है।
- दक्ष, दक्षता, कुशल प्रसव सहायक (एसबीए) और नर्स प्रैक्टिशनर मिडवाफरी (एनपीएम) सहित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जिससे विशेष रूप से दूरस्थ के क्षेत्रों में सामान्य प्रसव को बढ़ावा देने

और प्रारंभिक तथा शुरुआती 6 माह तक केवल स्तनपान का समर्थन करने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

- **पोषण ट्रैकर**, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं (एडब्ल्यूडब्ल्यू) द्वारा आंगनवाड़ी केंद्रों (एडब्ल्यूसी) में स्पष्ट संकेतकों पर सभी कार्यकलापों की वास्तविक समय पर निगरानी और ट्रैकिंग के लिए एक डिजिटल एप्लिकेशन है। यह एप्लिकेशन प्रमुख व्यवहारों और सेवाएं संबंधी परामर्श वीडियो प्रदान करता है जो जन्म की तैयारी, प्रसव, प्रसवोत्तर देखभाल, स्तनपान और पूरक भोजन से संबंधित संदेशों के प्रचार में सहयोग करते हैं। पोषण ट्रैकर का उपयोग करने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए नियमित रूप से फील्ड स्तर पर प्रशिक्षण और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।
- **समुदाय को सक्रिय करने और जागरूकता बढ़ाने वाले कार्यकलाप** भी आयोजित की जाती हैं जिससे लोगों को पोषण संबंधी पहलुओं जैसे कि वद्धिरोध, स्तनपान की शीघ्र शुरुआत, शुरुआती स्तनपान और उपयुक्त पूरक पोषण प्रथाओं के बारे में शिक्षित किया जा सके। राज्य और संघ राज्य क्षेत्र क्रमश: सितंबर और मार्च-अप्रैल महीनों में मनाए जाने वाले पोषण माह और पोषण पखवाड़े के दौरान जन आंदोलन के अंतर्गत नियमित जागरूकता संबंधी कार्यकलाप आयोजित कर रहे हैं और उनकी रिपोर्टिंग कर रहे हैं, साथ ही नियमित सामुदायिक आधारित कार्यक्रम (सीबीई) भी आयोजित कर रहे हैं।
- नीति आयोग के विकास निगरानी एवं मूल्यांकन कार्यक्रम (डीएमईओ) ने सितंबर 2025 में 'स्वास्थ्य क्षेत्र की सीएसएस योजनाओं के मूल्यांकन अध्ययन' में सूचित किया है कि नई माताओं को बच्चे के जन्म के बाद की अवधि में सिर्फ स्तनपान के बारे में जानकारी मिली। इससे पता चलता है कि सुविधा केंद्र और सामुदायिक स्तर पर जन्म के बाद के परामर्श और स्वास्थ्य शिक्षा के प्रयास प्रभावशाली रहे हैं। सरकार स्तनपान के तरीकों को बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय/क्षेत्रीय/राज्य स्तर पर नियमित समीक्षा बैठकें, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के फील्ड भ्रमण और सामान्य समीक्षा मिशन (सीआरएम) भी आयोजित करती है।

*****